

अपठितगद्यांशः ।

अपठितं नाम यस्य अन्तर्भावः पाठ्यपुस्तके नास्ति । अपठितगद्यस्य पठनं छात्रैः करणीयम् । तस्य आकलनं कृत्वा कृतयः कर्तव्याः ।

- १) प्रथमं परिच्छेदः पठनीयः ।
- २) पदविच्छेदं कृत्वा अर्थः बोधनीयः ।
- ३) निर्दिष्टानुसारं कृतयः कर्तव्याः ।

उदाहरणम् -

एकस्य काकस्य मुखे रोटिका आसीत् । सः वृक्षस्य उपरि शाखायाम् अतिष्ठत् । ततः एकः लोमशः तत्र आगच्छत् । लोमशः काकस्य मुखे रोटिकां दृष्ट्वा अचिन्तयत्, यदि एषः स्वमुखं विवृतं करिष्यति तर्हि सा रोटिका अधः पतिष्यति । अहं च तां खादिष्यामि । सः काकं वदति, ‘त्वं तु अतीव सुन्दरोऽसि । तव स्वरः अपि मधुरः स्यात् । एकं गीतं गातुं शक्नोषि किल?’’

स्वप्रशंसां श्रुत्वा काकः आनन्दितः । यदा सः गीतं गायति तदा तस्य मुखात् रोटिका अधः पतति । लोमशः रोटिकां खादित्वा शीघ्रं ततः पलायनं करोति ।

कृतीः कुरुत ।

- अ) पूर्णवाक्येन उत्तरत ।
काकः कुत्र उपाविशत्?
- आ) अधोरखितशब्दस्य कृते प्रश्ननिर्माणं कुरुत ।
लोमशः काकस्य मुखे रोटिकां दृष्ट्वा अचिन्तयत् ।
- इ) लकारं लिखत ।
अतिष्ठत् ।
- ई) प्रातिपदिकं लिखत ।
रोटिका, अहम्
- उ) अनुवादं कुरुत ।
स्वप्रशंसां श्रुत्वा काकः आनन्दितः ।
- ऊ) एकम् अव्ययं चित्वा लिखत ।

नाम

* नामतालिकां पूर्यत ।

| नाम | प्रातिपदिकम् | अन्तम् | लिङ्गम् | विभक्ति: | वचनम् |
|--------------|--------------|--------|---------|----------|-------|
| भाषासु | | | | | |
| चेतांसि | | | | | |
| युवकानाम् | | | | | |
| वणिजौ | | | | | |
| याचनया | | | | | |
| पद्धत्या | | | | | |
| भार्या | | | | | |
| स्वामिन् | | | | | |
| रोमाणि | | | | | |
| स्रोतांसि | | | | | |
| जिह्वाम् | | | | | |
| व्याधिः | | | | | |
| भावी | | | | | |
| पुरि | | | | | |
| द्वारवत्याम् | | | | | |
| राजः | | | | | |
| भगवान् | | | | | |
| राजानम् | | | | | |
| पक्षिणः | | | | | |
| सरसः | | | | | |

| नाम | प्रातिपदिकम् | अन्तम् | लिङ्गम् | विभक्ति: | वचनम् |
|-------------|--------------|--------|---------|----------|-------|
| पितुः | | | | | |
| वाक् | | | | | |
| असुरेषु | | | | | |
| मितव्ययी | | | | | |
| वक्ता | | | | | |
| वैराणि | | | | | |
| मूर्खस्य | | | | | |
| पेषण्याम् | | | | | |
| स्थाल्याम् | | | | | |
| वटिकासु | | | | | |
| पयसा | | | | | |
| नामा | | | | | |
| दाता | | | | | |
| तपस्वी | | | | | |
| धर्मः | | | | | |
| कर्माणि | | | | | |
| ज्ञानिनः | | | | | |
| इन्द्रियाणि | | | | | |
| तन्वि | | | | | |

सर्वनाम

* सर्वनामतालिकां पूर्यत ।

| सर्वनाम | प्रातिपदिकम् | लिङ्गम् | विभक्ति: | वचनम् |
|----------|--------------|---------|----------|-------|
| तासु | | | | |
| एतासु | | | | |
| अस्माकम् | | | | |
| अहम् | | | | |
| अनेन | | | | |
| क्या | | | | |
| अस्मिन् | | | | |
| त्वया | | | | |
| माम् | | | | |
| मह्यम् | | | | |
| भवान् | | | | |
| सः | | | | |
| ते | | | | |
| ताम् | | | | |
| तस्याः | | | | |
| याः | | | | |
| अस्मै | | | | |
| तेभ्यः | | | | |
| अन्येन | | | | |
| तस्याम् | | | | |

| सर्वनाम | प्रातिपदिकम् | लिङ्गम् | विभक्ति: | वचनम् |
|---------|--------------|---------|----------|-------|
| तस्मात् | | | | |
| तद् | | | | |
| सर्वम् | | | | |
| यस्मात् | | | | |
| कः | | | | |
| एषः | | | | |
| सर्वेषु | | | | |
| तान् | | | | |
| अयम् | | | | |
| माम् | | | | |
| तव | | | | |
| एतद् | | | | |
| मा | | | | |
| यः | | | | |

क्रियापदरूपाणि

धातुतालिका

प्रथमः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|-----------------------|----------|-----------|--------------|-------------------|----------|---------------|----------------|
| गै-गाय् (प.प.) | गायति | अगायत् | गास्यति | गायतु, गायतात् | गायेत् | गीयते | जगौ |
| अनु + भू (प.प.) | अनुभवति | अन्वभवत् | अनुभविष्यति | अनुभवतु | अनुभवेत् | अनुभूयते | अनुबभूव |
| त्यज् (प.प.) | त्यजति | अत्यजत् | त्यक्ष्यति | त्यजतु | त्यजेत् | त्यज्यते | तत्याज |
| रक्ष् (प.प.) | रक्षति | अरक्षत् | रक्षिष्यति | रक्षतु | रक्षेत् | रक्ष्यते | ररक्ष |
| भज् (उ.प.) | भजति | अभजत् | भक्ष्यति | भजतु | भजेत् | भज्यते | बभाज |
| | भजते | अभजत | भक्ष्यते | भजताम् | भजेत | | भेजे |
| परि + ईक्ष् (आ.प.) | परीक्षते | पर्यैक्षत | परीक्षिष्यते | परीक्षताम् | परीक्षेत | परीक्ष्यते | परीक्षाश्चक्रे |
| रुच् (आ.प.) | रोचते | अरोचत | रोचिष्यते | रोचताम् | रोचेत | रुच्यते | रुरुचे |
| आ + रभ् (आ.प.) | आरभते | आरभत | आरप्स्यते | आरभताम् | आरभेत | आरभ्यते | आरेभे |
| अभि + नी (आ.प.) | अभिनयते | अभ्यनयत | अभिनेष्यते | अभिनयताम् | अभिनयेत | अभिनीयते | अभिनिन्ये |

द्वितीयः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|--------------|---------|----------------------|------------|---------|-----------|------------|---------|
| रुद् (प.प.) | रोदिति | अरोदीत्, अरोदत् | रोदिष्यति | रोदितु | रुद्यात् | रुद्यते | रुरोद |
| हन् (प.प.) | हन्ति | अहन् | हनिष्यति | हन्तु | हन्यात् | हन्यते | जघान |
| स्वप् (प.प.) | स्वपिति | अस्वपीत्, अस्वपत् | स्वप्स्यति | स्वपितु | स्वप्यात् | सुप्यते | सुष्वाप |
| अस् (प.प) | अस्ति | आसीत् | भविष्यति | अस्तु | स्यात् | भूयते | बभूव |

| | | | | | | | |
|-------------|----------------|----------|----------|----------|----------|--------|------|
| ब्रू (प.प.) | ब्रवीति, आह | अब्रवीत् | वक्ष्यति | ब्रवीतु | ब्रूयात् | उच्चते | उवाच |
| (आ.प.) | ब्रूते | अब्रूत | वक्ष्यते | ब्रूताम् | ब्रुवीत | | ऊचे |
| या (प.प.) | याति | अयात् | यास्यति | यातु | यायात् | यायते | ययौ |

तृतीयः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|-----------|--------|---------|---------|---------|-----------------------|---------------|-----------------------|
| दा (प.प.) | ददाति | अददात् | दास्यति | ददातु | दद्यात् | दीयते | ददै |
| (आ.प.) | दत्ते | अदत्त | दास्यते | दत्ताम् | ददीत | | ददे |
| भी (प.प.) | बिभेति | अबिभेत् | भेष्यति | बिभेतु | बिभियात्, बिभीयात् | भीयते | बिभाय/ बिभयाज्वकार |

चतुर्थः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|-------------------|-----------|----------|-------------|-------------|-----------|---------------|---------|
| नृत् (प.प.) | नृत्यति | अनृत्यत् | नर्तिष्यति | नृत्यतु | नृत्येत् | नृत्यते | ननर्त |
| युध् (आ.प.) | युध्यते | अयुध्यत | योत्स्यते | युध्यताम् | युध्येत | युध्यते | युयुधे |
| सम्+पद् (आ.प.) | सम्पद्यते | समपद्यत | सम्पत्स्यते | सम्पद्यताम् | सम्पद्येत | सम्पद्यते | सम्पेदे |

पञ्चमः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|------------|--------|---------|-----------|--------|----------|---------------|---------|
| श्रु (प.प) | शृणोति | अशृणोत् | श्रोष्यति | शृणोतु | शृणुयात् | श्रूयते | शुश्राव |

षष्ठः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|-------------|-------|--------|-----------|---------|--------|---------------|--------|
| लिख् (प.प.) | लिखति | अलिखत् | लेखिष्यति | लिखतु | लिखेत् | लिख्यते | लिलेख |
| दिश् (प.प.) | दिशति | अदिशत् | देक्ष्यति | दिशतु | दिशेत् | | दिदेश |
| (आ.प.) | दिशते | अदिशत | देक्ष्यते | दिशताम् | दिशेत | दिश्यते | दिदिशे |

सप्तमः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|-------------|----------|------------------|-----------|-----------|------------|------------|--------|
| युज् (प.प.) | युनक्ति, | अयुनक् अयुनग् | योक्ष्यति | युनक्तु | युञ्ज्यात् | युञ्ज्यते | युयोज |
| युज् (आ.प.) | युडक्ते | अयुडक्त | योक्ष्यते | युडक्ताम् | युञ्जीत | | युयुजे |

अष्टमः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|-----------|--------|--------|----------|----------|----------|------------|-------|
| कृ (प.प.) | करोति | अकरोत् | करिष्यति | करोतु | कुर्यात् | क्रियते | चकार |
| (आ.प.) | कुरुते | अकुरुत | करिष्यते | कुरुताम् | कुर्वीत | | चक्रे |

नवमः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|--------------|----------|-----------|------------|------------|------------|------------|----------|
| प्री (प.प.) | प्रीणाति | अप्रीणात् | प्रेष्यति | प्रीणातु | प्रीणीयात् | प्रीयते | पिप्राय |
| (आ.प.) | प्रीणीते | अप्रीणीत | प्रेष्यते | प्रीणीताम् | प्रीणीत | | पिप्र्ये |
| ग्रह् (प.प.) | गृङ्घाति | अगृङ्घात् | ग्रहीष्यति | गृङ्घातु | गृङ्घीयात् | गृह्यते | जग्राह |
| (आ.प.) | गृङ्घीते | अगृङ्घीत | ग्रहीष्यते | गृङ्घीताम् | गृङ्घीत | | जगृहे |

दशमः गणः

| धातुः | लट् | लङ् | लृट् | लोट् | लिङ् | कर्मणि लट् | लिट् |
|--------------|---------|----------|-------------|-----------|----------|------------|---------------|
| पीड् (प.प.) | पीडयति | अपीडयत् | पीडयिष्यति | पीडयतु | पीडयेत् | पीड्यते | पीडयामास |
| (आ.प.) | पीडयते | अपीडयत | पीडयिष्यते | पीडयताम् | पीडयेत | | पीडयाश्चक्रे |
| वर्ण् (प.प.) | वर्णयति | अवर्णयत् | वर्णयिष्यति | वर्णयतु | वर्णयेत् | वर्ण्यते | वर्णयामास |
| (आ.प.) | वर्णयते | अवर्णयत | वर्णयिष्यते | वर्णयताम् | वर्णयेत | | वर्णयाश्चक्रे |
| सूच् (प.प.) | सूचयति | असूचयत् | सूचयिष्यति | सूचयतु | सूचयेत् | सूच्यते | सूचयामास |
| (आ.प.) | सूचयते | असूचयत | सूचयिष्यते | सूचयताम् | सूचयेत | | सूचयाश्चक्रे |
| कथ् (प.प.) | कथयति | अकथयत् | कथयिष्यति | कथयतु | कथयेत् | कथ्यते | कथयामास |
| (आ.प.) | कथयते | अकथयत | कथयिष्यते | कथयताम् | कथयेत | | कथयाश्चक्रे |
| वञ्च् (प.प.) | वञ्चयति | अवञ्चयत् | वञ्चयिष्यति | वञ्चयतु | वञ्चयेत् | वञ्च्यते | वञ्चयामास |
| (आ.प.) | वञ्चयते | अवञ्चयत | वञ्चयिष्यते | वञ्चयताम् | वञ्चयेत | | वञ्चयाश्चक्रे |

समासः

* समासतालिकां पूर्यत ।

| सामासिकशब्दः | समासविग्रहः | समासनाम |
|-------------------|-------------|---------|
| सवेगम् | | |
| प्रतिसप्ताहम् | | |
| अचिरात् | | |
| प्राप्तख्यातिः | | |
| सविनयम् | | |
| प्रतिविभागम् | | |
| दत्तचित्तः | | |
| ज्ञातुकामः | | |
| भिन्नरुचिः | | |
| अपर्यासम् | | |
| भयाकुलचित्तम् | | |
| प्रत्युत्पन्नमतिः | | |
| पितृगृहम् | | |
| शीतस्पर्शः | | |
| अरोचिष्णुः | | |
| जिह्वाग्रम् | | |
| शोणितसङ्घातः | | |
| देहसादः | | |
| अपगतदिव्यप्रभावा | | |
| भेरीताडनम् | | |
| चिन्ताशोकसागरः | | |
| विदिशाभिधानम् | | |
| अपगतासून् | | |
| महातपाः | | |
| अक्षमः | | |

| सामासिकशब्दः | समासविग्रहः | समासनाम |
|-----------------------|-------------|---------|
| कोटरोदरेषु | | |
| क्षितितलम् | | |
| विजितेन्द्रियः | | |
| अव्यवस्थितचित्तस्य | | |
| षट्पदम् | | |
| अवैरेण | | |
| अव्यवस्थितम् | | |
| यथार्हम् | | |
| लघुरूपः | | |
| एलाचूर्णम् | | |
| हिङ्गुधूपेन | | |
| श्येनवपुः | | |
| अक्षतदेहम् | | |
| अत्याज्यः | | |
| अक्षमः | | |
| मनुष्यवाचा | | |
| कर्मफलहेतुः | | |
| विमूढात्मा | | |
| मिथ्याचारः | | |
| अकर्मणि | | |
| असर्क्तः | | |
| कर्मफलम् | | |
| आक्षिभ्रुवम् | | |
| कण्ठकपोलम् | | |
| सपित्तः | | |
| सरक्तः | | |
| द्वादशयोजनम् | | |
| अन्यान्यदेशान्तरायातः | | |

| सामासिकशब्दः | समासविग्रहः | समासनाम |
|----------------------|-------------|---------|
| सर्वसत्त्वाभयप्रदः | | |
| शरणागतः | | |
| दुर्गापुरनगरे | | |
| दृढविश्वासः | | |
| कार्यमग्रः | | |
| पुत्रद्वयोपेता | | |
| गहनकानने | | |
| जम्बुककृतोत्साहम् | | |
| भयाकुलम् | | |
| जम्बुककृतः | | |
| व्याघ्रमारी | | |
| षट्पदपिपीलिकाः | | |
| अन्यान्यरोगिजनेभ्यः | | |
| अपगतदिव्यप्रभावा | | |
| भेरीताडननियुक्ताय | | |
| चिन्ताशोकसागरनिमग्रः | | |
| जनानुकम्पा | | |
| प्रवचनावगतौ | | |
| द्वादशयोजव्यापी | | |
| अन्यान्यौ | | |
| चिन्ताशोकौ | | |
| सूत्रार्थैँ | | |
| शाल्मलीवृक्षः | | |
| द्वारस्थिता | | |
| क्षितितलविप्रकीर्णाः | | |
| पञ्जरस्थम् | | |
| मध्यस्थः | | |

| सामासिकशब्दः | समासविग्रहः | समासनाम |
|---------------------|-------------|---------|
| सत्यवक्ता | | |
| मितव्ययी | | |
| हितभुक् | | |
| देवासुराः | | |
| सत्यानृते | | |
| मितभुक् | | |
| प्रियवादिनम् | | |
| मृगपक्षिणाम् | | |
| घृताक्ता | | |
| शर्करायुक्तम् | | |
| एलाचूर्णविमिश्रितम् | | |
| शर्करैलासमायुक्ताः | | |
| पाकज्ञः | | |
| हिङ्गुसर्पिभ्याम् | | |
| शर्करैला: | | |
| जीरकार्द्रकसैन्धवैः | | |
| सर्वसत्त्वानि | | |
| अभयप्रदः | | |
| इन्द्रधमौ | | |
| श्येनकपोतयोः | | |
| योगस्थः | | |
| सिद्ध्यसिद्ध्योः | | |

तद्वितान्तः ।

* नामः वा विशेषणस्य अग्रे प्रत्ययं योजयित्वा अपि शब्दा भवन्ति । वयम् एतादृशानां शब्दानां लीलया उपयोगं कुर्मः । ते नाम तद्विताः । मूलशब्दस्य अग्रे प्रत्ययं योजयित्वा तत्सम्बन्धदर्शकः शब्दः प्राप्यते । तेषां वृत्तिसहितानि उदाहरणानि अत्र संक्षेपेण दीयन्ते ।

- १) आधुनिकः = अधुना भवः ।
- २) महत्वम् = महतः भावः ।
- ३) दैनिकम् = दिने भवम् ।
- ४) पार्किकम् = पक्षे भवम् ।
- ५) सामाहिकम् = सप्ताहे भवम् ।
- ६) वार्षिकम् = वर्षे भवम् ।
- ७) कौशलम् = कुशलस्य भावः ।
- ८) शैश्वम् = शीघ्रस्य भावः ।
- ९) शिथिलत्वम् = शिथिलस्य भावः ।
- १०) नियमात् = नियमतः ।
- ११) माहात्म्यम् = महात्मनः भावः ।
- १२) वाणिज्यम् = वणिजः भावः ।
- १३) सूरभेः = सुरभेः अयम् ।
- १४) आधिक्यम् = अधिकस्य भावः ।

- १५) उत्कृष्टता = उत्कृष्टस्य भावः ।
- १६) योग्यता = योग्यस्य भावः ।
- १७) भिन्नत्वम् = भिन्नस्य भावः ।
- १८) शीलता = शीलस्य भावः ।
- १९) बुद्धिमती = बुद्धिः अस्याः अस्ति ।
- २०) दिव्या = दिवि भवा ।
- २१) मधुरता = मधुरस्य भावः ।
- २२) पक्षिणः = पक्षौ स्तः एषाम् ।
- २३) विटपिनः = विटपम् एषाम् अस्ति ।
- २४) भगवान् = भगः अस्य अस्ति ।
- २५) प्राजापत्यः = प्रजापतेः अपत्यं पुमान् ।
- २६) समत्वम् = समस्य भावः ।
- २७) देही = देहः अस्य अस्ति ।
- २८) सर्वशः = सर्वः अस्ति अस्य ।

* तद्वितालिकां पूर्यत ।

| तद्वितवृत्तिः | विग्रहः |
|---------------|----------------------|
| आधिक्यम् | |
| | सुरभेः अयम् |
| माहात्म्यम् | |
| | शिथिलस्य भावः |
| वार्षिकम् | |
| | कुशलस्य भावः |
| सामाहिकम् | |
| | पक्षे भवम् |
| नियमात् | |
| | वणिजः भावः |
| महत्वम् | |
| | बुद्धिः अस्याः अस्ति |

| तद्वितवृत्तिः | विग्रहः |
|---------------|------------------|
| उत्कृष्टता | |
| | सर्वः अस्ति अस्य |
| योग्यता | |
| | देहः अस्य अस्ति |
| वार्षिकम् | |
| | कुशलस्य भावः |
| समत्वम् | |
| | भिन्नस्य भावः |
| शीलता | |
| | पक्षौ स्तः एषाम् |
| भगवान् | |
| | मधुरस्य भावः |

कृदन्ता:

(पुं. प्रथमाएकवचनम्)

| धातुः | कृत् | कृतवतु | कृत्याः | | | शतृ/शानच् |
|-------------------------|------------|---------------|---------------|---------------|-------------|------------------|
| गम्-गच्छ् (१ प.प.) | गतः | गतवान् | गम्यः | गन्तव्यः | गमनीयः | गच्छन् |
| रम् (१ आ.प.) | रतः | रतवान् | रम्यः | रन्तव्यः | रमणीयः | रममाणः |
| मन् (४ आ.प.) | मतः | मतवान् | मान्यः | मन्तव्यः | मननीयः | मन्यमानः |
| दा-यच्छ् (१ प.प.) | दत्तः | दत्तवान् | देयः | दातव्यः | दानीयः | यच्छन् |
| पा-पिब् (१ प.प.) | पीतः | पीतवान् | पेयः | पातव्यः | पानीयः | पिबन् |
| ज्ञा (९ उ.प.) | ज्ञातः | ज्ञातवान् | ज्ञेयः | ज्ञातव्यः | ज्ञानीयः | जानन्/जानानः |
| नी-नय् (१ उ.प.) | नीतः | नीतवान् | नेयः | नेतव्यः | नयनीयः | नयन्/नयमानः |
| कृ (८ उ.प.) | कृतः | कृतवान् | कार्यः कृत्यः | कर्तव्यः | करणीयः | कुर्वन्/कुर्वाणः |
| सृ (१ प.प.) | सृतः | सृतवान् | सार्यः | सर्तव्यः | सरणीयः | सरन् |
| पठ् (१ प.प.) | पठितः | पठितवान् | पाठ्यः | पठितव्यः | पठनीयः | पठन् |
| पत् (१ प.प.) | पतितः | पतितवान् | पात्यः | पतितव्यः | पतनीयः | पतन् |
| खाद् (१ प.प.) | खादितः | खादितवान् | खाद्यः | खादितव्यः | खादनीयः | खादन् |
| वद् (१ प.प.) | उदितः | उदितवान् | वाद्यः | वदितव्यः | वदनीयः | वदन् |
| नृत् (४ प.प.) | नर्तितः | नर्तितवान् | नृत्यः | नर्तितव्यः | नर्तनीयः | नृत्यन् |
| लिख् (६ प.प.) | लिखितः | लिखितवान् | लेख्यः | लेखितव्यः | लेखनीयः | लिखन् |
| सेव् (१ आ.प.) | सेवितः | सेवितवान् | सेव्यः | सेवितव्यः | सेवनीयः | सेवमानः |
| वन्द् (१ आ.प.) | वन्दितः | वन्दितवान् | वन्द्यः | वन्दितव्यः | वन्दनीयः | वन्दमानः |
| प्रा+अर्थ् (१०आ.प.) | प्रार्थितः | प्रार्थितवान् | प्रार्थ्यः | प्रार्थितव्यः | प्रार्थनीयः | प्रार्थयमानः |
| पूज् (१० उ.प.) | पूजितः | पूजितवान् | पूज्यः | पूजितव्यः | पूजनीयः | पूजयन्/पूजयमानः |
| कथ् (१० उ.प.) | कथितः | कथितवान् | कथ्यः | कथितव्यः | कथनीयः | कथयन्/कथयमानः |
| दृश्-पश्य् (१ प.प.) | दृष्टः | दृष्टवान् | दृश्यः | द्रष्टव्यः | दर्शनीयः | पश्यन् |
| प्रच्छ्-पृच्छ् (६ प.प.) | पृष्टः | पृष्टवान् | प्रच्छ्यः | प्रष्टव्यः | प्रच्छनीयः | पृच्छन् |
| प्रा+विश् (६ प.प.) | प्रविष्टः | प्रविष्टवान् | प्रवेश्यः | प्रवेष्टव्यः | प्रवेशनीयः | प्रविशन् |
| आ+दिश् (६ उ.प.) | आदिष्टः | आदिष्टवान् | आदेश्यः | आदेष्टव्यः | आदेशनीयः | आदिशन्/आदिशमानः |
| मुच्-मुञ् (६ उ.प.) | मुक्तः | मुक्तवान् | मोच्यः | मोक्तव्यः | मोचनीयः | मुञन्/मुञ्चमानः |
| वच् (२ प.प.) | उक्तः | उक्तवान् | वाच्यः | वक्तव्यः | वचनीयः | वचन् |
| आ+रभ् (१ आ.प.) | आरब्धः | आरब्धवान् | आरभ्यः | आरब्धव्यः | आरभणीयः | आरभमाणः |
| लभ् (१ आ.प.) | लब्धः | लब्धवान् | लभ्यः | लब्धव्यः | लभनीयः | लभमानः |
| वह् (१ उ.प.) | ऊढः | ऊढवान् | वाह्यः | वोढव्यः | वहनीयः | वहन्/वहमानः |
| आ+रुह्-रोह् (१ प.प.) | आरूढः | आरूढवान् | आरोह्यः | आरोढव्यः | आरोहणीयः | आरोहन् |

कृदन्तरूपाणि उपस्तम्भे लिखत ।

१)

| कृत | कृतवतु | कृत्या: | शतृ/शानच् |
|-----|--------|---------|-----------|
| | | | |
| | | | |

(दातव्यः, गतः, मात्यः, पानीयः, दृष्टवान्, पिबन्, ज्ञातः, कथितवान्)

२)

| कृत | कृतवतु | कृत्या: | शतृ/शानच् |
|-----|--------|---------|-----------|
| | | | |
| | | | |

(पूजयमानः, उदितः, लेख्यः, सेवितव्यः, प्रार्थयमानः, वन्दनीयः, पूजयन्, नर्तितवान्)

३)

| कृत | कृतवतु | कृत्या: | शतृ/शानच् |
|-----|--------|---------|-----------|
| | | | |
| | | | |

(प्रविष्टवान्, कथनीयः, द्रष्टव्यः, मुञ्चमानः, प्रच्छयः, उक्तवान्, मुञ्चन्, आदिष्टः)

४)

| कृत | कृतवतु | कृत्या: | शतृ/शानच् |
|-----|--------|---------|-----------|
| | | | |
| | | | |

(आरोहन्, वहनीयः, लब्धव्यः, आरभ्यः, उक्तवान्, वहमानः, आदिष्टवान्, प्रवेशः)

५)

| कृत | कृतवतु | कृत्या: | शतृ/शानच् |
|-----|--------|---------|-----------|
| | | | |
| | | | |

(लभमानः, आरभणीयः, वक्तव्यः, मोच्यः, प्रविष्टवान्, कथयितव्यः, वन्दमानः, लिखितः)

सन्धिः

* सन्धितालिकां पूर्यत ।

- १) निराशोऽहम् =+..... ।
- २) = भिन्नरुचिः+ हि ।
- ३) आत्मपुत्रावेकैकशः=+..... ।
- ४) = हसन् + आह ।
- ५) तर्जयन्त्युवाच =+..... ।
- ६) = कश्चित् + लक्षते ।
- ७) दर्शनाद्धर्षयति=+..... ।
- ८)= कषायः+ तु ।
- ९) स्फुटयतीन्द्रियाणि=+..... ।
- १०)= वाद्या+ एषा ।
- ११) व्याधिरसून्=+..... ।
- १२) = सूत्रार्थौ+अन्तराले ।
- १३) दत्तश्च=+..... ।
- १४)= राजधानी + आसीत् ।
- १५) पशवश्च=+..... ।
- १६)= पितुः+ अहम् ।
- १७) भवद्विरस्य=+..... ।
- १८)= महती + इयम् ।
- १९) अपगतासूंश्च=+..... ।
- २०)= जाबालिः+ नाम ।
- २१) तद्व=+..... ।
- २२)= तस्मात् + ऽ ।
- २३) यद्वेषु=+..... ।
- २४)= हि + एतद् ।
- २५) स्मरेन्नित्यम् =+..... ।
- २६)= क्वचित् + रुषः ।
- २७) अपकारांश्च=+..... ।
- २८)= वपुः + आख्याति ।
- २९) लोडयेच्च=+..... ।
- ३०)= मज्जिका + इति ।
- ३१) वस्त्रागर्भाभिरन्यामिः=+..... ।
- ३२)= वासनार्थम् + तु ।
- ३३) अवतार्यात्रि=+..... ।
- ३४) = इति + अभिधीयते ।
- ३५) राजाभूतः=+..... ।
- ३६) = तु + एतद् ।
- ३७) ततस्त्यक्त्वा=+..... ।
- ३८)= शिबिः + उवाच ।
- ३९) आरोपयन्नृपः=+..... ।
- ४०)= शिबेः + अङ्गम् ।
- ४१) अन्यांस्तौ=+..... ।
- ४२) = तौ + अन्तर्धानम् ।
- ४३) कर्मण्येव=+..... ।
- ४४)= अधिकारः + ते ।
- ४५) कर्मफलहेतुर्भूः=+..... ।
- ४६)= श्रेष्ठः + तत् ।
- ४७) तदेव=+..... ।
- ४८) = यथा + उल्बेन ।
- ४९) एतैर्विमोहयति=+..... ।
- ५०)= विमोहयति + एषः ।
- ५१) बुद्धिरस्य=+..... ।
- ५२)= कश्चित् + लक्षते ।

अमरकोषः ।

पञ्जक्तिः

- १) **शीतम्**— शीतं गुणे तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः ।
- २) **वपुः**— गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ।
- ३) **पक्षी**— शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ।
- ४) **प्रजापतिः**— स्रष्टा प्रजापतिर्वेदा विधाता विश्वसृद्धिः ।
- ५) **वृत्तान्तः**— वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ।
- ६) **मूढः**— अजे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः ।
- ७) **पुरुषः**— क्षेत्रज्ञः आत्मा पुरुषः ।
- ८) **धूमः**— धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ।
- ९) **आदर्शः**— दर्पणे मुकुरादशौ ।
- १०) **वर्तनम्**— भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ।
- ११) **याचना**— यात्राऽभिशस्तियाचनार्थना ।
- १२) **वृत्तिः**— आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ।
- १३) **पण्यम्**— विक्रयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयास्त्रिषु ।
- १४) **भृत्यः**— भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।
- १५) **स्वामी**— अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृद्धोऽधिपः ।
- १६) **व्याघ्रः**— शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे ।
- १७) **धूर्तः**— उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ।
- १८) **रोगः**— स्त्री रुग्युजा चोपतापरोगव्याधिगदामया ।
- १९) **शक्लम्**— भित्तं शक्लखण्डे वा पुंस्यर्थोऽर्थं समेऽशके ।
- २०) **कण्ठः**— कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कंधरे त्यपि ।

विग्रहः

- शीतम्, सुषीमः, शिशिरः, जडः ।
- गात्रम्, वपुः, संहननम्, शरीरम्, वर्ष्म, विग्रहः ।
- शकुन्तिः, पक्षी, शकुनिः, शकुन्तः, शकुनः, द्विजः।
- स्रष्टा, प्रजापतिः, वेदा:, विधाता, विश्वसृट्, विधिः ।
- वार्ता, प्रवृत्तिः, वृत्तान्तः, उदन्तः, आह्वयः ।
- अजः, मूढः, यथाजातः, मूर्खः, वैधेयः, बालिशः।
- क्षेत्रज्ञः, आत्मा, पुरुषः ।
- धूमः, धूमलः, कृष्णलोहितः ।
- दर्पणः, मुकुरः, आदर्शः ।
- भरण्यम्, भरणम्, मूल्यम्, निर्वेशः ।
- यात्रा, अभिशस्तिः, याचना, अर्थना ।
- आजीवः, जीविका, वार्ता, वृत्तिः, वर्तनम्, जीवनम् ।
- विक्रयम्, पणितव्यम्, पण्यम्, क्रय्यम् ।
- दासः, दासेरः, दासेयः, गोप्यकः, चेटकः ।
- अधिभूः, नायकः, नेता, प्रभुः, परिवृद्धः, अधिपः ।
- शार्दूलः, द्वीपी, व्याघ्रः ।
- उन्मत्तः, कितवः, धूर्तः, धत्तूरः, कनकः ।
- रुक्, रुजा, उपतापः, व्याधिः, गदः, आमयः ।
- भित्तम्, शक्लम्, खण्डम्, अर्थम् ।
- कण्ठः, गलः, ग्रीवा, शिरोधिः, कंधरा ।

१. नाम + सर्वनाम तालिकां पूर्यत ।

| क्र. | नाम | प्रातिपदिकम् | अन्तम् | लिङ्गम् | विभक्ति: | वचनम् |
|------|---------|--------------|-----------|---------------|----------|----------|
| १) | भाषासु | | आकारान्तः | स्त्रीलिङ्गम् | | बहुवचनम् |
| २) | व्याधिः | व्याधि | | | प्रथमा | एकवचनम् |
| ३) | वक्ता | वक्तृ | | पुंलिङ्गम् | प्रथमा | |
| ४) | माम् | अस्मद् | सर्वनाम | | द्वितीया | |
| ५) | अस्मै | इदम् | सर्वनाम | पुंलिङ्गम् | | |

२. क्रियापदानां लकारैः सह मेलनं कुरुत ।

क्रियापदः

- १) अगायत्
- २) त्वक्ष्यति
- ३) रक्षतु
- ४) भजते
- ५) अभिनयताम्
- ६) आरभ्यते

लकारः

- क) कर्मणि लट्
- ख) लोट्
- ग) लट्
- घ) लिङ्
- ड) लङ्
- च) लृट्

३. समासतालिकां पूर्यत ।

| क्र. | सामासिकशब्दः | समासविग्रहः | समासनाम |
|------|---------------|--|------------------|
| १) | प्रतिसप्ताहम् | सप्ताहे सप्ताहे । | |
| २) | भिन्नरुचिः | । | बहुरुचिः |
| ३) | | न क्षतः । | नव् तत्पुरुषः |
| ४) | अक्षिभ्रुवम् | अक्षिणी च भ्रुवौ च एतेषां समाहारः । | |
| ५) | | जनेषु अनुकम्पा । | सप्तमी तत्पुरुषः |

४. तद्वित-तालिकां पूरयत ।

- १) आधुनिकः = ।
- २) माहात्म्यम् = ।
- ३) = वर्षे भवम् ।
- ४) = मधुरस्य भावः ।
- ५) = देहः अस्य अस्ति ।

५. कृदन्तरूपाणि लिखत ।

| क्र | क्रतवतु | कृत्या: | शतृ/शानच् |
|-----|---------|---------|-----------|
| | | | |
| | | | |

(सार्यः, वदितव्यः, आदिष्टवान्, पीतः, वहन्/वहमानः, सृतः, प्रार्थनीयः)

६. सन्धि:-पूर्वपदं/उत्तरपदं लिखत ।

- १) वस्त्रगर्भाभिरन्याभिः = ।
- २) = परीक्ष्यान्यतरत् + भजन्ते ।
- ३) सङ्गोऽस्तु = + ।
- ४) = शोषयति + अन्नम् ।
- ५) तुष्टावक्षतदेहम् = + ।

७. सूचनानुसारं परिवर्तनं कुरुत ।

- १) स्म निष्कास्य वाक्यं पुनर्लिखत ।
चन्दमामा इति मासिकं बालकानां चेतांसि आकर्षयति स्म ।
- २) लकरं परिवर्तयत ।
मनुजः अपकारान् विस्मरेत् । (लोट्लकारं प्रयुज्य वाक्यं पुनर्लिखत ।)
- ३) पूर्वकालवाचकं निष्कास्य वाक्यं पुनर्लिखत ।
किञ्चित् विचिन्त्य शिवदासः प्रतिप्रश्नं कृतवान् ।
- ४) सति-सप्तमी रचनां निष्कासयत ।
अध्यापके प्रविष्टे छात्राः तूष्णीम् उपविशन्तु ।
- ५) वाच्यपरिवर्तनं कुरुत ।
वासुदेवः प्रयोजनं कथितवान् ।

८. गद्यांशं पठित्वा निर्दिष्टः कृतीः कुरुत ।

गोरखपुरस्य कारागारम् । ‘काकोरी’ प्रकरणसम्बन्धी कक्षन् बन्धने स्थापितः । विचारणा प्रवृत्ता । अन्ते न्यायाधीशः उक्तवान् – ‘शूलारोपणेन दण्ड्यते एषः’ इति । एतां वार्ता श्रुत्वा सर्वे खिन्नाः । किन्तु सः चिन्तितवान् – ‘मातुः पदतले आत्मानं समर्पयितुं कक्षन् अवसरः लब्धः’ इति । अतः सः सनुष्टः । पुत्रस्य मरणदण्डनवार्ता श्रुत्वा माता धावन्ती आगतवती । मातरं दृष्ट्वा सः बहु रुदितवान् । माता पृष्टवती – ‘भवान् धीरः राष्ट्रभक्तः इति ख्यातः । परन्तु मरणात् भीतः इव लक्ष्यते इदानीम् । एवं चेत् किमर्थम् एषः मार्गः आश्रयणीयः आसीत् भवता ?’ तदा सः उक्तवान् – ‘अहं मरणात् भीतः न । सिंहस्य उदरे सिंहः एव उत्पद्यते, न तु शृगालः । मातृवात्सल्यात् वश्चितः भवामि खलु इति दुःखम् अम्ब !’

शूलारोपणदिने प्रातः उत्थाय सः भगवद्गीतां पठितवान् । योगासनं पूजां च कृतवान् । एतद् दृष्ट्वा अधिकारी पृष्टवान् – “किमर्थम् एतद् सर्वं करोति भवान् ?” इति । “भारतीयानां पुनर्जन्मनि विश्वासः । एतस्य जन्मनः फलम् अग्रिमजन्मनि प्राप्स्यामः । कष्टकरं कार्यं कर्तुम् उत्तमं शरीरम् आवश्यकं खलु ? अतः योगासनं करोमि”, इति उक्तवान् सः तरुणः । एषः अप्रतिमः राष्ट्रभक्तः एव । देशाय आत्मानं समर्प्य प्रेरणादायकः जातः सः ।

अ. पूर्णवाक्येन उत्तरत ।

शूलारोपणदिने राष्ट्रभक्तः कां पठितवान् ?

आ. अधोरेखितशब्दस्य कृते प्रश्ननिर्माणं कुरुत ।

भारतीयानां पुनर्जन्मनि विश्वासः ।

इ. लकारं लिखत ।

प्राप्स्यामः ।

ई. प्रातिपदिकं लिखत ।

वार्ताम्, सः

उ. अनुवादं कुरुत ।

पुत्रस्य मरणदण्डनवार्ता श्रुत्वा माता धावन्ती आगतवती ।

ऊ. एकम् अव्ययं चित्वा लिखत ।